काशी नगरी का एक आकर्षण

गुरु रविदास

मन्दिर :: कल्पना :: निर्माण

दी रविदास स्मारक सोसाइटी, नई दिल्ली का एक उपक्रम

शाखा कार्यालय : ८६-ए, रविन्द्रपुरी, वाराणसी - ५

गुरु रविदास मन्दिर

राजघाट, वाराणसी के

निर्माण के प्रणेता

मानतीय श्री जगजीवनराम जी

मन ही पूजा मन ही धूप, मन ही सेऊँ सहज सरूप ।

—गुरु रविदास

खोजत फिरौं भेद वा घर को, कोई न करत बखानी ।
रैदास संत मिले मोहिं सतगुरु, दीन्हौ सूरत सहदानी ॥

—मीराबाई

काशी की महिमा विख्यात है । प्राचीन काल से यह भारत की धार्मिक एवं सांस्कृतिक राजधानी रही है । साथ ही साथ अंध-विश्वास और रूढ़िवादिता के लिए भी काशी प्रसिद्ध है । अनेक साधु-संतों, ऋषि - मुनियों, सिद्ध - महात्माओं एवं विचारकों की जन्म-भूमि और कर्मभूमि होने का गौरव इसे प्राप्त है । इसी महिमामयी काशी में रविदासजी का जन्म हुआ था ।

श्री गुरु रविदास के पूर्ववर्ती, समकालीन एवं परवर्ती संतों, महात्माओं, विचारकों एवं सम्प्रदाय-संस्थापकों की स्मृति में मंदिर, मठ, आश्रम तथा स्मारक काशी में बनाये गये हैं, जहाँ से उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व की महिमा के प्रचार के लिए संस्थाएँ काम कर रही हैं । इन सम्प्रदायों के संस्थापकों के यहाँ मठ और गद्दियाँ हैं, आश्रम और जायदाद है ।

श्री गुरु रविदास के वंशज, अनुयायी और भक्त भारत के सभी क्षेत्रों में पाये जाते हैं । उनकी संख्या करोड़ों में है । रविदासजी कितने महान् एवं असाधारण साधक थे, यह सिर्फ इससे सिद्ध हो जाता है कि मीराबाई जैसी असाधारण जिज्ञासु महिला ने सतगुरु रविदास को ही अपना गुरुदेव बनाया । मीराबाई चित्तौड़ के राजघराने की रानी थी । मीरा ने मथुरा-वृन्दावन, अयोध्या, प्रयाग और काशी को छान डाला, पर मीरा को ज्ञान देने वाला कोई महात्मा नहीं मिला । रविदासजी ने ही उन्हें आत्म-दर्शन का मार्ग बताया । तभी मीरा ने विभोर होकर गाया :—

खोजत फिरौं भेद वा घर को, कोई न करत बखानी ।
रविदास संत मिले मोहि सतगुरु, दीन्हौ सूरत सहदानी ॥

सत-गुरु रविदास ने अपने पवित्र आचरण और साधना से उस युग के सभी लोगों को प्रभावित किया। परम्परागत रूढ़िवादिता के ऊपर कठिन प्रहार किया। धर्म के वाह्य आडम्बर, अन्ध विश्वास, पुरोहितवाद तथा वर्ण व्यवस्था के नाम पर समाज में व्याप्त सामाजिक अन्याय, विषमता एवं शोषण के विरुद्ध संघर्ष का सूत्रपात किया। अपनी वाणी से इन व्यवस्थाओं के मिथ्यात्व को सावित करते हुये अछूतों और समाज के उपेक्षित वर्गों को मुक्ति का मार्ग दिखाया।

महान् संत, विचारक, साधक एवं क्रान्ति के अग्रदूत सतगुरु रविदास ने सभी व्यक्तियों के लिए समता एवं सम्मान का संदेश दिया। धर्म निरपेक्षता, सर्वधर्म समभाव और मनुष्य के ईश्वरत्व को अपनी वाणी द्वारा मुखरित किया। साथ ही साथ पारस्परिक प्रेम और विश्वबन्धुत्व का अमर संदेश सम्पूर्ण विश्व में उजागर किया। गुरु रविदास के अमर संदेश काशी से ही प्रचारित हुए।

सत–गुरु रविदास ने आध्यात्मिक गुरु होने के साथ-साथ समाज को बदलने का भी संदेश दिया। कुछ उदाहरण नीचे हैं :—

योग-साधना एवं आत्म दर्शन

सो जप जपौ जो बहुरि न जपना। सो तप तपौ जो बहुरि न तपना।
सो गुरु करौ जो बहुरि न करना। ऐसा मरो जो बहुरि न मरना।
उलटी गंग जमुन में लावौं। बिन ही जल मंजन ह्वै पावौं।

जाति-पात के विरोध में

जनम जात मत पूछिए, का जात का पात।
'रविदास' पूत सम प्रभू के, कोउ नहीं जात कुजात।
जातपात के फेर महि, उरझि रहई सभ लोग।
मानुषता को खात हुई "रविदास" जात कर रोग।
जाति–जात में जात है, ज्यों केलन के पात।
"रविदास" न मानुष जुड़ सके, जौ लौं जात न जात।

गुलामी, दासता, बंधुआ-मजदूर के विरोध में

पराधीनता पाप है, जान लेहु रे मीत।
"रविदास" दास पराधीन सौ कौन करै है प्रीति।

पराधीन को दीन क्या, पराधीन बेदीन।
"रविदास" दास पराधीन को, सबही समझै हीन।

समाजवाद

ऐसा चाहौ राज मैं, जहाँ मिले सबन कौ अन्न।
छोट बड़ों सभ सम बसै, "रविदास" रहे प्रसन्न।

सर्वधर्म समभाव, हिन्दू-मुस्लिम एकता

मुसलमान सो दोसती, हिन्दुअन सौ कर प्रीत।
रविदास जोति सभ राम की सभ है अपने मीत।

कहन सुनन कू दुइ करि थापे, खालिक कीन्हों अजब तमासा।
हिन्दु तुरुक दोउ एक है भाई, सच भासै रविदासा।

रविदास हमारो राम जोई, सोई है रहमान।
काबा काशी जानी यही, दोनो एक समान।

मसजिद सौ कुछ घिन नहीं, मंदिर सौ नहीं पियार।
दोहि मह अल्लह राम नहीं कहु रविदास चमार।

कृष्ण करीम राम हरि राघव, जब लग एक न पेखा।
वेद कतेब कुरान पुरानन, सहज एक नहिं देखा।

निर्गुण उपासना

राम जानहुं ना भगत कहाऊँ, चरन पखारुं न देवा।
जोई जोई करों उलटि मोहि बाँधे, ता तें निकट न भेवा।

पाँचों थकित भये हैं जंह तंह, जहाँ तहाँ थिति पाई।
जा कारन मैं दौरो फिरतों, सो अब घट में आई।

मन ही पूजा मन ही धूप।
मन ही सेऊँ सहज सरूप।

वेद ईश्वरकृत नहीं

चारिउ वेद किया खंडौति।
जन रैदास करै डंडौति।

समतावादी शासन

अब हम खूब वतन घर पाया।
ऊँचा खेर सदा मेरे भाया।

बेगमपुर शहर का नाम।
फिकर अंदेश नहीं तेहि ग्राम।

नहिं जहां सांसत लानत मार।
हैफ न खता न तरस जवाल।

कह रैदास खलास चमारा।
जो हम सहरी सौ मीत हमारा।

रविदासजी के जीवन काल में ही लाखों लाख स्त्री-पुरुष उनके शिष्य और अनुयायी बन गये थे। ऐसे युगपुरुष की स्मृति में उनकी जन्म-भूमि में किसी मंदिर या स्मारक का निर्माण न होना खटकने वाली बात थी।

सतगुरु रविदासजी इतने महान थे कि किसी मठ, मंदिर या स्मारक के अभाव में उनकी महत्ता संकुचित नहीं हुई । वह आज भी जगत् को ध्रुवतारा की भाँति दिशा-निर्देश दे रहे हैं । फिर भी सतगुरु रविदासजी की स्मृति में उपयुक्त संस्थान, मंदिर, स्मारक की आवश्यकता समझ कर भारत के राष्ट्रीय नेता, दलितों और शोषितों के मसीहा श्रद्धेय बाबू जगजीवनराम जी, भूतपूर्व उपप्रधान मंत्री (प्रतिरक्षा), भारत सरकार की अध्यक्षता एवं निर्देशन में संस्थापित "दी रविदास स्मारक सोसाईटी" (रजिस्टर्ड), नई दिल्ली, के अन्तर्गत सतगुरु रविदास मंदिर तथा स्मारक समूह के निर्माण का महान् संकल्प किया गया है।

स्थान और निर्माण

सतगुरु रविदास के एक विशाल और भव्य मंदिर निर्माण के लिए काशी में उपयुक्त स्थान की खोज बहुत दिनों से की जा रही थी । बड़े प्रयास के बाद, संयोग से काशी स्टेशन के पास ही गंगा नदी के पवित्र घाट "राजघाट" पर एक बहुत बड़ी जमीन जिस पर ५ किता बंगले खड़े थे, मिल गई । जमीन का क्षेत्रफल करीब ४० हजार वर्गफुट है । यह जमीन गंगा नदी के तट पर पूरब से पश्चिम २७० फीट लम्बी है तथा जी० टी० रोड से "राजघाट" जाने वाली पक्की सड़क पर ८० फुट लम्बी है। इस पवित्र स्थान से २०० गज की दूरी पर काशी स्टेशन तथा तत्कालीन काशी-नरेश के प्राचीन ऐतिहासिक किला के भग्नावशेष हैं ।

काशी का यह सबसे बड़ा घाट "राजघाट" सतगुरु रविदास के कृतित्व, व्यक्तित्व तथा साधना के चमत्कार की अमर कहानी से जुड़ा हुआ समझा जाता है । इसी घाट पर काशी - नरेश की उपस्थिति में सतगुरु रविदास ने शास्त्रार्थ में काशी के पंडितों को पराजित करके अपना वर्चस्व स्थापित किया था । इसलिए इस स्थान पर मंदिर के निर्माण का विशेष महत्व है । इस जमीन की बैनामा रजिस्ट्री रविदास स्मारक सोसाईटी, नई दिल्ली के नाम सन् १९७६ मे हुई ।

यह जमीन गंगा नदी के किनारे सड़क और नदी से २६ फुट की ऊँचाई पर है । जमीन मिलने के बाद मकानों को तोड़कर जमीन को समतल किया गया । इसी स्थान पर आयोजित अखिल भारतीय रविदास महा - सम्मेलन के अवसर पर दिनांक १२ अप्रैल १९७९ को रविदास मंदिर का शिलान्यास श्रद्धेय बाबू जगजीवन राम जी (तत्कालीन उप प्रधानमंत्री), प्रतिरक्षा, भारत सरकार के कर कमलों से सम्पन्न हो चुका है । रविदास मंदिर निर्माण की वृहत् एवं महती योजना है जिसके अन्तर्गत निम्नांकित अंग होंगे :—

१. एक भव्य एवं विशाल सफेद संगमरमर का मंदिर जिसकी लम्बाई-१०८ फुट, चौड़ाई ७० फुट तथा मुख्य शिखर की ऊँचाई १०८ फुट होगी। इस मंदिर के एक भाग में गुरु रविदास को शिष्या चित्तौड़ की महारानी भक्त मीरा बाई का मंदिर होगा।

२. गंगा नदी की ओर २७० फुट की लम्बाई में तथा सड़क का तरफ ८० फुट लम्बे हिस्से में दोमंजिला अतिथि भवन का निर्माण होगा।

३. मंदिर के सामने गंगा के किनारे जाने के लिए पक्के घाट का निर्माण होगा ताकि दर्शनार्थी गंगा-स्नान के बाद घाट से सीधे मंदिर में आकर दर्शन-पूजन कर सकें।

४. संत साहित्य पर शोध कार्य करनेवाले विद्वानों तथा छात्रों के लिए आवास का निर्माण।

५. एक संग्रहागार का निर्माण जिसमें रविदासजी से सम्बन्धित उपलब्ध सामग्री का संचय होगा।

६. एक अतिरिक्त संग्रहालय जिसमें रविदासजी के परम अनुयायी श्री जगजीवन राम से प्राप्त अनमोल सामग्री का आकलन और प्रदर्शन होगा।

७. अनुसंधान केन्द्र द्वारा रविदासजी के जन्म स्थान, निर्वाण स्थान तथा भारत भ्रमण के दौरान उनके प्रवास और विश्राम के स्थानों की छानबीन करना और वहाँ शिलापट्ट स्थापित करना।

८. संत-साहित्य पर एक विशिष्ट पुस्तकालय एवं वाचनालय का निर्माण।

९. प्रेक्षागृह तथा सभा-कक्ष का निर्माण।

१०. संतों की चित्रदीर्घा जिसमें सभी संतों एवं विचारकों के चित्रों को भी रखा जायेगा।

गुरु रविदास मंदिर का स्थान सड़क से २६ फुट की ऊँचाई पर गंगा नदी के किनारे पर होने के कारण मंदिर के भार वहन करने की जमीन की क्षमता का वैज्ञानिक परीक्षण आवश्यक समझा गया। वैज्ञानिकों की सलाह से गर्भगृह के समीप की जमीन की १५ मीटर गहराई की मिट्टी का तथा दूसरे भाग की ४ मीटर गहराई की मिट्टी का (प्लेट टेस्ट) परीक्षण किया गया। फलस्वरूप तय हुआ कि १६ फुट गहरी नींव की खुदाई करके रैफ्ट फाउण्डेशन देकर बीम व कालम पर निर्माण का काम किया जा सकेगा। मंदिर और भवनों को कटाव से बचाने के लिए दुबारा तकनीकी विशेषज्ञों के विश्लेषण के बाद यह निर्णय हुआ है कि २३ फुट चौड़ी, २६ फुट ऊँची दीवाल की जगह सिर्फ १० फुट गहरी और ५ फुट चौड़ी नींव पर १६ फुट ऊँची दीवाल बना दी जाए। यह दीवाल ३५० फुट लम्बी होगी। इस दीवाल के साथ-साथ सामने ५ फुट चौड़े बरामदे सहित १४ फुट लम्बे, १२ फुट चौड़े कमरों वाला एक दो मंजिला भवन बना दिया जाए। इसमे बाढ़ से कटाव का खतरा रुक जाएगा और मिट्टी का भार भी आगे खिसकने नहीं पायेगा। गंगा नदी के किनारे से मंदिर बहुत सुन्दर लगेगा। इसी के अनुसार निर्माण का रूपांकन (डिजाइन) किया गया और दिसम्बर १९८२ से निर्माण का काम प्रारम्भ कर दिया गया।

प्रथम चरण

निर्माण के प्रथम चरण में रिटेनिंग वाल (दीवाल) का निर्माण तथा १६ फुट गहरी नींव खुदाई करके ७० फुट चौड़ी १०८ फुट लम्बाई की रैफ्ट फाउन्डेशन पर विशाल गुरु रविदास मंदिर का निर्माण हो रहा है। मंदिर की कुर्सी से मंदिर की ऊँचाई ५० फुट तथा शिखर की ऊँचाई १०८ फुट है। मंदिर के चारों कोनों एवं सिंहद्वार पर भी छोटे-छोटे शिखर बनेंगे। १०८ फुट लम्बे तथा ७० फुट चौड़े मंदिर के हाल में गर्भगृह होगा। उसमें गुरु रविदास की भव्य मूर्ति की स्थापना होगी। गंगा नदी के सामने मंदिर का सिंहद्वार है। उसके बगल से सीढ़ियाँ ऊपर जाती हैं जिससे होकर मंदिर की दूसरी मंजिल की गैलरी में दर्शनार्थी जा सकेंगे और वहाँ से पूजन एवं भजन-कीर्तन देख सकेंगे।

गर्भगृह के बगल में रविदास जी की प्रमुख शिष्या चित्तौड़ के राणा कुल की महारानी मीराबाई का मंदिर होगा जिसमें मीराबाई की मूर्ति की स्थापना होगी। मंदिर

बाहर भीतर से सफेद संगमरमर का होगा। रविदास जी की वाणियों एवं साखियों को संगमरमर पर खोदकर दीवारों में लगाया जायेगा। अन्य संतों एवं साधकों जैसे कबीर, मीरा, नानकदेव, नामदेव, सुन्दरदास, चरणदास, पलटूदास, सहजोबाई आदि के शब्दों को भी सफेद संगमरमर पर खोद कर लगाया जायेगा। निर्माण के बाद मंदिर के चारों तरफ ३० हजार वर्ग फुट खुली जगह रहेगी। इस जमीन में भी सफेद संगमरमर लगाने की योजना है। निर्माण में कुल एक लाख, तीस हजार वर्ग फुट संगमरमर लगने का अनुमान है।

गुरु रविदास मंदिर एक मंजिल तक बन चुका है। दूसरी मंजिल तथा अतिथिगृह का निर्माण हो रहा है। सफेद संगमरमर पर गुरु रविदास के शब्दों को लिखने का काम भी शीघ्र प्रारम्भ होगा ताकि मंदिर की दूसरी मंजिल की छत तैयार होते ही मंदिर की दीवालों में संगमरमर लगाया जा सके। मंदिर निर्माण का कार्य कठिन तथा खर्चीला है क्योंकि सड़क से २६ फुट की ऊँचाई पर हो रहा है। अतः सभी सामग्रियों को नीचे से मजदूरों द्वारा ही ऊपर पहुँचाया जाता है। इस प्रकार अधिक धन व्यय हो रहा है।

काशी का एक विशेष आकर्षण

जिस समय गुरु रविदास का सफेद संगमरमर का विशाल मंदिर गंगा के प्रसिद्ध राजघाट के पक्के घाट सहित बनकर तैयार हो जायेगा उस समय काशी नगरी की शोभा में अद्वितीय एवं आकर्षक अभिवृद्धि होगी। यह मंदिर गुरु रविदास के करोड़ों वंशजों, भक्तों और अनुयायियों की ही नहीं बल्कि जन-जन की भावनाओं को साकार करेगा। देश-विदेश के पर्यटकों तथा तीर्थयात्रियों के और विशेषकर दुनियाँ के अनेक देशों में बसे हुए गुरु रविदास के वंशजों के आकर्षण का यह एक प्रमुख केन्द्र होगा। जी०टी० रोड द्वारा, रेलवे द्वारा तथा गंगा में नौका द्वारा काशी में प्रवेश करते ही इस दर्शनीय एवं प्रेरणादायक भव्य मंदिर का सर्वप्रथम दर्शन होगा, जिसके वायु-मंडल तथा पुण्य सलिल गंगा की लहरों से बराबर यही मधुर ध्वनि सुनाई देगी कि यह उसी महान साधक एव संत का भव्य मंदिर है जिसने "मन ही पूजा मन ही धूप" "नीचहूं ऊँच करै मेरा गोविन्द" "बेगमपुर शहर का नाउं" जैसे निर्गुण भक्ति और शोषण-रहित समतामूलक सुखी समाज का संदेश दिया था।

जमीन के बैनामा रजिस्ट्री, जमीन के विकास तथा रविदास मंदिर के निर्माण पर ३१ मार्च, ८४ तक करीब १४ लाख (चौदह लाख) रुपया खर्च हो चुका है। निर्माण तेजी से चल रहा है। इस महान् एवं बहुमुखी योजना को मूर्तरूप देने में करीब एक करोड़ रुपया व्यय होने का अनुमान है।

यह है संक्षेप में गुरु रविदास मंदिर राजघाट, वाराणसी के निर्माण की योजना

यह साधारण कार्य नहीं है। सामूहिक शक्ति से ही यह महान और पवित्र कार्य पूर्ण हो सकेगा। देश के दानी महानुभावों से अपील है कि वे गुरु रविदास मंदिर के निर्माण के महान संकल्प में उदारतापूर्वक धन देकर सहायता करें। गुरु रविदास जी के करोड़ों अनुयायियों से अपील है कि इस पुनीत काम में यथाशक्ति जल्दी ही अपनी मदद, सहायता, अनुदान भेजने की कृपा करें।

अपनी सहायता एवं दान की धनराशि "दी रविदास स्मारक सोसाइटी नई दिल्ली" के नाम मनिआर्डर से, चेक अथवा बैंक ड्राफ्ट से सीधे नीचे लिखे पते पर भेजने की कृपा करें। दान की धनरशि सीधे बैंक भेजने की सूरत में इसकी सूचना वाराणसी स्थित कार्यालय को अवश्य भेज दें।

पता :—

१. श्री रामलखन जी, महामंत्री
८६-ए०, रविन्द्रपुरी, वाराणसी-५

२. दी बनारस स्टेट बैंक लि०,
मदनपुरा शाखा, वाराणसी

निवेदक

दी रविदास स्मारक सोसाईटी (रजिस्टर्ड), नई दिल्ली के

प्रबन्ध समिति के सदस्यगण

बृजपाल दास कोषाध्यक्ष	रामलखन (भू. पू. सिंचाई मंत्री) महामंत्री
सुरेश कुमार (भू. पू. विधायक) मंत्री (बिहार)	चाँदराम एम. पी. (हरियाणा)
प्रभाती राम (अमृतसर)	सुशील कुमार सिन्दे एम.एल.ए. (महाराष्ट्र)
नरायन भाई पी० मकवाना (गुजरात)	नथुनी राम भू. पू. सांसद (बिहार)
करसनदास यू. परमार एडवोकेट भू. पू. सांसद (गुजरात)	गनपति राम भू. पू. सांसद जौनपुर

निर्माणाधीन

गुरु रविदास मन्दिर

राजघाट, वाराणसी

(साइड एलिवेशन) सड़क की तरफ का दृश्य

काशी की शोभा में नवीन अभिवृद्धि

गुरु रविदास मन्दिर, राजघाट, वाराणसी

गंगा किनारे से सिंह द्वार का दृश्य

ओरिएण्ट प्रिन्टर्स, डी. ३७/१०८, बड़ादेव, वाराणसी • फोन । ६६७३६